

ரெயின்போ

₽ B

రెయిన్బో

साधी

SATHI

RAINBOW

ரெயின்போ

extremely difficult to even get two proper

meals a day. For children at Rainbow Homes, it was another emotional crisis, as while they themselves were safe and provided for all the necessities, their families were in state of despair. Since, we already had done many efforts to remain connected to parents, we could feel the situation and tried to reach with help at the earliest. Our whole team, including the children themselves came forward for the mission.



# हम बोलें दुनिया सुने...

সাখী

EN.

**FILE** 

ரெயின்போ

S S

రెయిన్బో

SATHI

**GITIS** 

ரெயின்போ

साधी

रेनबो

SATHI

RAINBOW

हमारे आपके लिए सबसे बडी खशी या सबसे बडी राहत इस बात की होती है कि जब हम संकट में फंसे हों, बुरी तरह से घिरे हुए हों, उस समय हमारे दोस्त या शुभचिंतक हमारी मदद के लिए सामने आये। कोरोना काल भी ऐसी ही परीक्षा की घड़ी है मानवता के लिए। इसमें हमला कई तरफ से हुआ- सबसे पहले तो बीमारी का डर, फिर सुरक्षित परिवेश में खुद को व अपनों को रखने की चुनौती और सबसे बड़ी भूख व गरीबी से लड़ते हुए जिंदा रहने का संघर्ष। इस कई चेहरे वाली आपदा से लड़ने के लिए रेनबो होम्स ने जिस तरह से मिलकर काम किया, एक दूसरे का हाथ पकड़ा रहा, वह निश्चित तौर पर बेमिसाल है। हमने आगे बढ़कर सर्वे किया। इसके जरिये यह जानने की कोशिश की कि रेनबो होम्स का जो व्यापक पारिवारिक दायरा है, हमारे बच्चों के जो परिजन हैं. उनकी क्या स्थिति है। उनके कष्ट, उनके

संकटों से सीधे हमने अपना कनेक्शन जोडा। यह हमारे लिए बिल्कुल नया क्षेत्र था। इसमें हम सब एक परिवार की तरह, एक दोस्ताना नेटवर्क की तरह लगे रहे।

उन्हें लगा कि कोई है, जो निस्वार्थ

In any moment of crisis, when we

situation, we get relieved the most when

we come to know that there is someone who is

pandemic was a similar test for our humanity this

man. There was the fear of infection, then was to

keep oneself and all near ones safe and lastly to

hand and to fight together in this tough time was

ascertain the actual conditions and needs of our

tried to connect to their misery and pain. We all

worked together as a family in this effort.

extended network, the families of our children. We

This exercise created a hope among children as

survive while fighting with hunger and poverty. The

way Rainbow Homes came forward to lend a helping

remarkable. We did a sample survey so that we can

time. It was a fight on many fronts for the common

coming with soe help. The time of the Corona

are surrounded by a hopeless

We speak

इस कोशिश ने रेनबो होम्स में रहने वाले बच्चों से लेकर उनके परिजनों तक के भीतर आशा का संचार किया।

world listens

उनकी मदद करने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहा है। कोरोना काल में. लॉकडाउन के दौरान और लॉकडाउन खत्म होने के बाद भी तमाम गरीब लोगों के लिए, बेघर लोगों के लिए दो वक्त के भोजन का इंतजाम करना मुश्किल हो गया। रेनबो होम्स में रहने वाले बच्चों के लिए भी यह भीषण दविधा का दौर था। उनके पास तो भोजन था. सरक्षा थी. लेकिन बाहर उनके परिजनों के लिए भोजन का इंतजाम करना मुश्किल हो रहा था। चूंकि हमने पहले से बच्चों के अभिभावकों के साथ जीवंत जुड़ाव स्थापित करने के कई प्रयास किए थे, लिहाजा हमने इस संकट को तुरंत भांप लिया और, मदद का हाथ बढ़ाया। ख़ुद हमारी टीम ने परिजनों को इस संकट से उबारने में मदद का बीड़ा उठाया, उनके घरों तक राशन पहंचाया। कहने की जरूरत नहीं, इसमें बच्चों ने जमकर शिरकत की। पूरी रेनबो होम्स टीम ने कोरोना संकट में मानवता की रक्षा के लिए अपने

ढंग से बिना किसी भी तरह का भेदभाव किए, बिना कोई शर्तें लगाए

इर्द-गिर्द नेकी बांटी। यह बढ़ा हुआ हाथ, बस एक ही संकेत दे रहा

हैं—गम हो या खुशी—हम सब साथ हैं। एक दूसरे का हाथ थामे हम मजबूती से खड़े होकर हर संकट का सामना कर सकते

हैं. कर रहे हैं।

हम लड़ेंगे, हम जीतेंगे !!!

well as their families. They felt that there is someone who is coming to their help without any prejudice, conditions or discrimination. During lockdown because of COVID-19, for most of the poor and homeless people it had become

These helping hands say us just one thing whether in distress or in happiness—we all are together. We are fighting every battle together and will keep doing so.

WE SHALL FIGHT. WE SHALL WIN!!!



# TEAM Work

Year 3, Issue 17 Corona Special

**EDITOR IN CHIEF** BHASHA SINGH

**ADVISIORY BOARD** 

T.M. KRISHNA K. LALITHA,

GEETA RAMASWAMY K. ANURADHA

#### **EDITORIAL BOARD**

CHANDA (DELHI)









**CITIZEN JOURNALIST** 

ARTI SINGHASAN, DELHI

DIVYA, HYDERABAD

CHAKRAVARTHY KUNTOLLA, HYDERABAD

PRIYADHARSHINI, CHENNAI

AMRUTA, BANGALORE

KANCHAN PASWAN, KOLKATA

JOYTI KUMARI PATNA



AMBIKA, DEEPTI BEZWADA WILSON

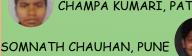
#### **CHILD JOURNALIST**













PRISCELLA **KOLKATA** 

KRANTHI **HYDERABAD** 

SRILATHA MORAMPUDI

SIVAGAMI NATARAJAN CHENNAI

NANKI

BABU S

SHADAN PATNA

SAKSHI TIWARI

Design:



SUPPORT TEAM

**HYDERABAD** 

**HYDERABAD** 

ROHIT KUMAR RAI



₽ P

• రెయిన్బో

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

#### Ranchi



Survey helped in bonding with the families

↑ rapid assessment study of COVID -19 impact was conducted by the team members of the homes. The survey was to be conducted through telephone calls. It was a new experiment for all of us and had hesitation about quality data / information collection. It was also assumed that many respondents may not understand questions, or they might not have time or interest in answering questions. But then, there was no other option to get related data/information. Hence, our team planned to conduct survey. Firstly, a sample survey was conducted with 3-4

parents and accordingly process and timings for the main survey were fixed. At various points we kept sharing and discussing survey experiences so that emerging problems can be sorted out on the go and we collect some qualitative information.

Almost all parents gave sufficient time for answering questions. Few parents were initially irked of so many questions but still they were encouraged and engaged. Maximum respondents were female, and they answered patiently. Besides

keeping the recorded audio of each conversation, all responses were entered in hard copy format as well. That helped in compilation of the findings. Entire records were uploaded on a Google sheet. That all formed the basis of required feedback.

We found out in the survey that entire community was in panic due to food crisis and losing jobs. They were scared of infection as their lived in hygienically poor conditions. In the early days of lockdown Government, social organizations and civil society, initiated distribution of cooked food & dry ration to people residing in slum areas, migrant workers and other vulnerable communities. But most of it was not enough for even a week. In these circumstances Rainbow Homes provided dry ration to the families of children residing in

> Homes. The quantity of rice, wheat, potatoes, onion and other items were sufficient enough for more than a month. It also included toiletries and other essential items of daily need. This had a very positive response from the community. It soothed their nerves. Homes team also tried to clear many fear and apprehensions about the COVID-19 situation.

The whole exercise also helped home team in strengthening sharing, trust and bonding with families.

Champa Tigga, SPM, Ranchi

# सर्वे से परिवारों से जुड़ाव भी बना

निवो होम्स की टीम ने कोविड-19 के प्र<mark>भावों के</mark> बारे में होम में 🔍 रहने वाले बच्चों के परिवारों के बीच एक सर्वे किया। सर्वे टेलीफोन पर बातचीत के जरिये हुए। पहले तो हम सभी को आशंका थी कि सर्वे कैसे होगा और कैसे वांछित जानकारी मिलेगी, क्या परिवार बात करेंगे? लेकिन फिर इसके अलावा कोई दुसरा रास्ता भी न था। पहले हमने तैयारी के लिए एक सैंपल सर्वे किया। सर्वे के दौरान बीच-बीच में हम आपस में अनुभव साझा करते रहे ताकि सामने आ रही दिक्कतों को समझकर दूर किया जा सके और अहम जानकारी एकत्र की जा सके।

तकरीबन सारे परिवारों ने तसल्ली से जवाब दिए, जवाब देने वालों में ज्यादातर महिलाएं थीं। हमने हर बातचीत को रिकॉर्ड भी किया और साथ ही अहम बातो को लिखकर भी रखा ताकि सर्वे के निष्कर्ष तैयार किए जा सकें। सर्वे से यह सामने आया कि सभी लोग लॉकडाउन के कारण पैदा हुए खाने-पीनो व नौकरी के संकट से परेशान थे। उन्हें संक्रमण का भी भय था क्योंकि ज्यादातर लोगों के घर उन इलाकों में थे जहां साफ-सफाई के हाल खराब थे। सरकार व बाकी लोगों से जो मदद मिली थी वो बमुश्किल हफ्ते भर चली होगी। तब रेनबो होम्स से जो राशन उन्हें मिला वह महीने भर से भी ज्यादा वक्त के लिए पर्याप्त था। उस मदद में खाने-पीने की चीजों व सुखे राशन के अलावा रोजमर्रा की जरूरत की बाकी अहम चीजें भी थीं। इसको लेकर समुदाय से काफी अच्छा रुख देखने को मिला। टीम ने महामारी को लेकर लोगों के भय व आशंकाओं को भी दर करने की कोशिश की। इस सारी कवायद से रेनबो होम्स की टीम को बच्चों के परिवारों का भरोसा जीतने और उनके साथ मजबूत जुड़ाव कायम करने में भी मदद मिली।

#### अभिभावकों की बातें

#### परिवार जैसी है रेनबो होम टीम

खिलखिलाहट रेनबो होम में रहन पारा है। जुली की मौसेरी बहन हूं। रेनबो होम ने हमारे किंग के बदलाव किंग खिलखिलाहट रेनबो होम में रहने वाली रुन्नी व बच्चों के साथ-साथ घरों में भी काफी बदलाव किया है। बच्चों को यहां हमेशा बहुत प्यार मिलता रहा है। कोरोना महामारी के कारण मोदी सरकार द्वारा अचानक लॉकडाउन लगा दिया गया और सड़कों पर रहने वाले बेसहारा लोगों के लिए किसी तरह का इंतजाम नहीं किया गया। एकाध बार जनधन खाते में बेशक 500 रुपये डल गए। जो सरकारी राशन मिला वो खाने लायक



**पिंकी देवी**, पटना

न था। कामकाज बंद हो गए थे। छोटे से घर में 10-12 लोगों को बंद रहना होता था। ऐसे खराब हाल में रेनबो होम की टीम ने हमें दो-दो बार राशन दिया जो महीने भर के लिए पूरा था। इसमें रोजमर्रा की जरूरत का हर सामान था। राशन देने के अलावा टीम लगातार संपर्क करके हमारे हालचाल भी लेती रही। इस तरह हमारी हर तकलीफ में वे हमारे साथ रहते हैं। हमारी बातें सुनते हैं और जरूरी कागजात बनवाने में भी मदद कर देते हैं। सरकारी कामकाज में भी दफ्तरों में मुलाकात करने में हमें हिम्मत देते हैं। वे लोग हमें अपने परिवार का हिस्सा लगते हैं।

# is like family to us

Tam cousin of Runni and Jhunni from ▲ Khilkhilahat Rainbow Home. Our lives have changed ever since our children came to the Rainbow Home. They get a lot of care and affection here and we feel very happy for that. Due to the Covid-19 pandemic, when lockdown was imposed, poor and homeless people like us were left in precarious condition. We just received 500 Rs couple of times in our Jan-dhan

accounts. Government ration was very less and poor in quality. There was no work for anyone and 10-12 people had to remain closed in small rooms. Where could be social distancing? In such crisis, we were helped by the Rainbow Homes team. They distributed ration for two months. It included things for all daily necessities. Besides they kept in touch with us to know if we had any problem. They listen to us and help us in getting all the essential documents. They also support us when we have to meet any government official. They are now like family to us.





ரெயின்போ சாத்தி

రెయిన్బో

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

# Survey, Agony and Intervention



Tith the whole world reeling under the current pandemic caused by Novel Coronavirus (SARS CoV-2) and the disease that it spreads - Covid-19, the worst hit has been the already vulnerable groups of population, such as, homeless and impoverished. Nationwide lockdown to curb spread of the disease and subsequent extension on social distancing, travel bans, closer of markets and industries affected migrant workers disproportionately who found themselves stranded, unable to return either to their places of work or their communities of origin

At this juncture, the challenge was to reduce on digital platform. the adverse effects on the families of children

mostly homeless or underprivileged. They were deprived of the PDS supplies or other provisional supports from government. To have deeper understanding of impact of COVID crisis on families in terms of food

security, housing and living condition, hygiene and sanitation facilities, economic distress and unemployment, fear of uncertainty, hunger etc., a need assessment exercise became necessary. A representative sample of 20 percent of the families of children under the aegis of Rainbow Homes Program, that is, 670 families across 10 cities selected for a rapid telephonic survey using a questionnaire consisting of semi structured, structured as well as open ended questions. The interviews were intentionally designed as free flowing telephonic conversations without making it sound like reading a questionnaire or checklist during interviews so that families get space to talk spontaneously and relevant information come out. Survey questions captured the details from sample families on aspects such as, i) awareness on COVID; ii)conditions on housing; water and sanitation; iii) health conditions; iv) availability of identification documents; v) occupations and income; vi) food & other emergency relief received; vii) hunger and starvation; viii) abuse incidences and ix) concerns, expectations and hopes of families in the context of COVID. The survey administered with the help of a group of volunteers and home team who underwent a series of training on questions and process of uploading information

Majority of the families reported being disturbed of Rainbow Homes/Sneh Ghars, who are or worried because of the uncertainties unveiled

since lockdown. families Some partially benefitted with relief measures by government, corporates and neighbourhood communities whereas, some had to complete rely on Rainbow's assistance



#### Findings at a glance!

**81%** families lost income; 50 percent either took loan or sold personal belongings for cash

**58%** families reported of having savings for only 7-14 days

79% families staying in rented accommodations could not pay rents for 2 month; 45 percent had good chance of being evicted on failing to pay rents.

48% families accessed unsafe toilet and 62 percent fetched unsafe drinking water

29% families spending money on drinking water and 12 percent accessing pay-and-use toilets experienced additional financial burdens.

70% families with long term illnesses had medicines only for a month.

46% families had only two meals a day; 7 percent had one meal a day and 19 percent starved for two days or more during lock down.

9% women experienced emotional or physical abuse or both, majorly by their spouses.

51% families were worried that they would not get back jobs.

64% families expects rations or food assistance.

survive through the crisis.

80 percent of the families living in rented accommodation expressed their inability to pay rent for two months. With uncertainty to get back jobs or work, rest of the families in rented accommodations are at risks of being evicted, thus might be vulnerable to experience homelessness gradually. Due to loss of income, families who need to bear tall financial expenses

for utilization of toilet, bathing, and accessing drinking water are compromising on health either by accessing water at free of cost from unrestricted sources or defecating open. Handwashing or

"I need to pay rent for 2 months to my landlord who keeps asking for rent this time also. I need money to pay rent or I will be evicted." - a single breadwinner

in Chennai

maintaining cleanliness, using hand sanitizers seem luxury for these families whose biggest worry has been about dying of hunger! Families with existing long-term chronic illnesses, particularly older people and children are the hardest hit by the economic impact of this pandemic. Many of the families surveyed who had medicines in stock for 14 -30 days during initial

period of lock down might have run out of their medicines and are unable to buy without work or cash in hands.

Food insecurity is continual source of

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिయर्रिध रेन्क़े ● जिल्लाकंटिया मार्क्के ● कुरुध्वेश रूक् ● (त्रदेनत्वा प्रार्थी

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिయर्रिध रुक़ ● जिल्लाका कार्क्ष ● जुरुधार रुक् ● (त्रहेनवा प्रार्थी

रेनबो साधी

রেইনবো সাখী

ரெயின்போ சாத்தி

రెయిన్బో

रेनबो साधी

SATHI

I don't know the number of days we have gone without food but sometimes we gave available food to the kids, while me and my husband do not eat".

- a mother in Delhi

concern and worry as it heightens malnutrition among children and lack of essential nutrition among adults. 88 percent of families who reported having rations in stock for a month would cut their meals from thrice to twice a day, twice to once a day and then might skip meals in coming months.

Pandemic might cause significant impact on mental health of the families, especially among single mother, attributing to the factors such as, housing instability, chronic stress, heightened domestic violence etc. Families who could not earn and went into increased debt traps by borrowing money might report higher rates of negative mental health impacts in the long-run. Survey found that with no work, men in the families increased consumption of alcohol on the pretext of frustration and stress leading to domestic violence.

Overall, It can be presumed that the lack of proper food and nutrition, loss of income, lack of access to health and medication, increasing mental health related concerns, increasing domestic violence and abuse could only lead to larger long term complications that could very well set back the "growth" in these families by a few decades. Children living with these families are the worst hit because overcrowding in substandard housing, prolonged food insecurity would have direct and indirect effects on their holistic growth. Hence, there is a need to use this opportunity to improve the socio-economic conditions of these communities on a longterm basis and not just provide relief measures as an immediate/short term response. Both government and civil society organizations need to coordinate and combine their efforts towards this important goal.

#### **Dolon Bhattacharyya**

Manager-Research,



# सर्वे, हताशा ओर दखल

रोना महामारी के कारण इस समय पूरी दुनिया बेहाल है और इससे सबसे ज्यादा प्रभावित लोगों में आबादी के सबसे कमजोर व हाशिये के तबके के लोग है- इनमें बेघर, गरीब सबसे ज्यादा हैं। बीमारी को रोकने के लिए जो देशव्यापी लॉकडाउन लगाया गया और शारीरिक दूरी बनाए रखने के लिए जो कदम उठाए गए, आने-जाने पर पाबंदियां लगीं, बाजार बंद हुए और उद्योगों पर असर पड़ा उनका असर अनुपात से कहीं ज्यादा प्रवासी श्रमिकों पर पडा जिनमें से कई न तो अपनी काम की जगहों पर रुक सके और न ही अपने मुल गांवों को लौट सके।

ऐसे हालात में, हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती यह थी

कि इस स्थिति के प्रतिकूल प्रभावों से रेनबो होम व स्नेह घरों में रहने वाले बच्चों और उनके परिवारों को कैसे बचाया जाए क्योंकि वे ज्यादातर बेघर व गरीब

परिवारों से आते हैं। वे सरकारों की तरफ से पीडीएस आपूर्ति या अन्य किसी मदद से भी वंचित कर दिए गए थे। ऐसे में इन परिवारों पर खाद्य सरक्षा, आवास, जीवन की स्थितियों, सफाई व स्वच्छता स्विधाओं, आर्थिक तंगी व बेरोजगारी, अनिश्चचतता के भय और भुखमरी के असर के बारे में एक विस्तृत अध्ययन करना जरूरी हो गया था। इसके लिए रेनबो होम्स प्रोग्राम के तहत आने वाले बच्चों के परिवारों में से 20 फीसदी का एक प्रतिनिधि सैंपल तैयार किया गया। इस तरह इसमें कल दस शहरों में 670 परिवार इस दायरे में लिए गए और उनसे टेलीफोन पर सर्वे किया गया और जानकारी ली गई। प्रश्नावली में पहले से तय सवालों के अलावा खुले सवाल भी रखे गए। लेकिन परिवारों से बातचीत को जानबूझकर इस तरह से तैयार किया गया था कि वह एक सहज-सामान्य बातचीत लगे कोई पूछताछ वाली

प्रासंगिक जानकारी भी आ जाए। सैंपल में शामिल परिवारों से जो विभिन्न जानकारी ली गई वे- कोविड को लेकर जागरुकता, आवास की स्थिति, साफ-सफाई, स्वास्थ्य स्थितियां, पहचान के दस्तावेजों की उपलब्धता, काम व आय, भोजन व अन्य आपात राहत की उपलब्धता, भुख के हालात, शोषण की घटनाओं और आशंकाओं व अपेक्षाओं को लेकर थीं। सर्वे का काम कई वालंटियर्स व होम की टीम ने मिलकर किया जिन्हें पहले सवालों और सारी प्रक्रिया को डिजिटली अपलोड करने की प्रक्रिया के बारे में प्रशिक्षण दिया

ज्यादातर परिवार अनिश्चितता की वजह से परेशान व चिंतित थे। कुछ ही परिवार थे जिन्हें सरकार, निजी संस्थाओं और आस-पड़ोस से किसी तरह की मदद मिली थी। बाकी सभी परिवार संकट से जुझने के लिए रेनबो होसे मिलने वाली मद पर ही पूरी तरह निर्भर थे।

महामारी परिवारों की मानसिक सेहत पर गंभीर असर डाल सकती है, खास तौर पर अकेली माओं की स्थित पर। उन्हें निवास की अनिश्चितता, निरंतर तनाव और बढ़ी हुई घरेलू हिंसा से जुझना पड़ता है। यह असर उन परिवारों पर और भी बढ़ जाता है जिनके पास आय का जरिया नहीं होता और जिन्हें घर चलाने के लिए लोगों से कर्ज लेना पड़ता है। सर्वे से यह भी सामने आया कि कोई रोजगार न होने के कारण परिवारों में आदिमयों में शराब पीने की लत बढ़ गई और इसकी परिणति बढ़ी घरेलू हिंसा के रूप में भी हुई।

कुल मिलाकर यह माना जा सकता है कि उपयुक्त भोजन व पोषण का अभाव, आय का हर्जा, स्वास्थ्य सुविधाओं व द्वाइयों की अनुपलब्धता, मानसिक सेहत से जुड़े मसलों की जटिलता, बढ़ता घरेलू शोषण व हिंसा- ये सब बड़ी, दीर्घकालीन जटिलताओं को ही पैदा करते हैं, जिसकी नतीजा इन परिवारों की प्रगति में आने वाले कई सालों के लिए अड़ंगा लग जाने के रूप में होता है। ऐसे परिवारों में रहने वाले बच्चों पर सबसे ज्यादा असर होता है। लिहाजा जरूरत इस बात की है कि इस मौके का इस्तेमाल इन परिवारों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को दीर्घकालीन आधार पर सुधारने में किया जाए। उन्हें केवल तात्कालिक राहत देकर जिम्मेदारी से छड़ी न पा ली जाए। यही सरकारों और सामाजिक संस्थाओं के सामने इस वक्त की सबसे बड़ी चुनौती है।





रेनबो साथी

SATHI

RAINBOW

# రెయిన్బో

#### Delhi

## न पढ़ाई छोड़ी और न ही काम



मैं पार्ट टाइम नौकरी करने के साथ-साथ कॉलेज में सेकेंड ईयर में पढ़ाई भी कर रही हूं। मुझे उन्नति हॉस्टल में रहते हुए चार साल हो गए हैं। मैं साल भर से एक नशामुक्ति केंद्र में काम करती हुं। लॉकडाउन के दौरान मैंने अपनी नौकरी व पढ़ाई, दोनों जारी रखे। पहले तो मैंने डर के मारे नौकरी छोड़ने का ख्याल किया, लेकिन फिर हमारी कॉर्डिनेटर

सुनीता दी ने समझाया कि जहाँ मैं काम करती हूं, वहां के बच्चों को मेरी ज्यादा जरूरत है। लॉकडाउन में मुझे कई बार ऑफिस से पैदल घर लौटना पड़ता था, जिसमें डेढ़ घंटा लग जाता था। कई बार मैं थककर हार मान लेती थी तो कभी मेरे साथी हौसला बढ़ाते तो कभी ननकी दी मेरी कांउसलिंग करती। यहां हॉस्टल में ऑनलाइन पढ़ाई शुरू करवाई गई ताकि उसमें मैं पीछे न रह जाऊं। फिर में चार-चार दिन काम की जगह पर ही रुककर हॉस्टल लौटती थी। मुझे सारी सावधानियां बरतनी पडती थीं और चार दिन जब हॉस्टल आती थी तो अच्छे से सैनेटाइज करती। पहली बार चार दिन के लिए सेंटर में रुकी थी तो खाने-पीने-सोने की बहुत दिक्कत हुई थी। फिर सुनीता दी ने सारे इंतजाम किए। इधर कुछ दिन बाद परीक्षाएं भी शुरू

हो गई। कुछ हॉस्टल की मदद से और कुछ अपनी कोशिश से मैं अच्छे से परीक्षाएं दे सकी। उधर सेंटर में भी बच्चों की टीचर नहीं आ रही थी तो मैंने बच्चों की क्लास ली, काउंसलिंग की, उनके साथ समय बिताया ताकि उन्हें अकेलापन न महसूस हो। मुझे हर कदम पर सबका साथ व सहयोग मिला जिससे मैं इन सारी कोशिशों में कामयाब रही।

রেইনবো সাখী

ರೈನ್ಯಬೋ

சாத்தி

ரெயின்போ

কু কু

రెయిన్బో

साधी

रेनबो

RAINBOW SATHI

রেইনবো সাখী

ರೈನ್ಯಬೋ

சாத்தி

ரெயின்போ

ফু জ

రెయిన్బో

रेनबो साथी

RAINBOW SATHI

#### **Kept on Working** as well as my studies

I am studying in 2nd year college as well as doing a part-time job. I have been staying in Unnati hostel for four years now. Since last one year, I am also working with a deaddiction centre. I kept doing both the things- job as well as studies. Initially, it came to my mind that I should leave my job. But then, my coordinator Sunita Di said to me that the kids at the centre also need my support. I should not leave them. On many occasions, I had to walk to my office for more than an hour because I couldn't get any transport during lockdown. Then I used to stay at centre for four days at stretch. After such stays, when I used to come back to the hostel, I was properly sanitised. Meanwhile, I also kept my online classes. Fortunately, I got support from everyone.

#### Friends of Rainbow Sathi

#### **Respected Editor, Greetings**

I have gone through the Corona Special Issue of "Rainbow Sathi". I liked its cover page, which was conveying a good message.

"We are all in this together. So please stay home and help to break the chain." Also, "We are alert. We are together and we will move forward together."

I would like to appreciate endeavours of Rainbow Home for arranging essential things for the poor family in this tough

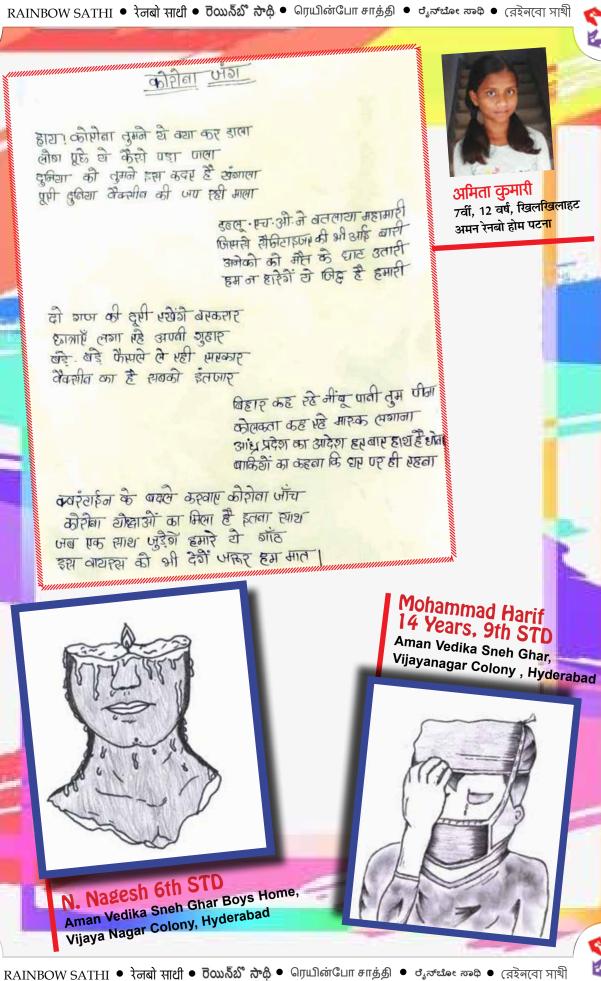
time of corona crisis. It is an admirable response to the pandemic.

ने रेनबो साथी का कोरोना स्पेशल अंक पढ़ा। मुझे इसका कवर पेज बहुत पसंद आया क्योंकि उससे काफी अच्छा संदेश मिल रहा था। इस मुश्किल वक्त में हम सब लोग साथ हैं, इसलिए बिना जरूरत बाहर न निकलें और बीमारी की कडी को तोडने में मदद दें। साथ ही, हम सब जागरुक हैं और हम मिलकर आगे बढ़ेंगे।

मैं कोरोना के संकट की इस मुश्किल घड़ी में गरीब लोगों के लिए जरूरी चीजें मुहैया कराने के रेनबो होम

टीम के प्रयासों की भी काफी सराहना करता हूं। महामारी के समय में यह काफी अहम कदम है।

New Delhi



RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठि००५ के Ф ि जिम्मीलंडिमा माम्रेमी ● रंजिया साथी ● विस्तिता प्रारी

Royal Valmiki

Class 6th.

சாத்தி

ரெயின்போ

মু জ

రెయిన్బో

रेनबो साथी

কু কু

ටිගාබින්

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

RAINBOW SATHI

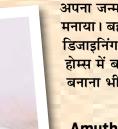
রেইনবো সাখী

ರೈನ್ಯಬೋ

# Quarantine experiences of young adults from Chennai

#### अमुथा ने क्वारेंटाइन में मनाया जन्मदिन

अम्था पहले रेनबो होम्स में रहती थी लेकिन फिर पढाई के लिए वह तिरुप्पर चली गई थी। लॉकडाउन के दौरान हॉस्टल में रहने वाले सारे बच्चे अपने घरों को चले गए। वह अकेली रह गई। तब रेनबो होम्स की स्टेट टीम ने उसे चेन्नई लाने के लिए ट्रैवल पास हासिल करने की भरसक कोशिश की और उसमें कामयाब भी हए। एक कार में उसे वापस बुलाया गया। लौटने के बाद उसे 15 दिन क्वारेंटाइन में रहना पडा। उसने



अपना जन्मदिन भी क्वारेंटाइन में ही मनाया। बहरहाल, चूंकि वह फैशन डिजाइनिंग पढ रही थी तो उसने रेनबो होम्स में बच्चों को अपने मास्क खुद बनाना भी सिखाया।

#### Amutha celebrated birthday in quarantine

My name is Amutha. I lived in ARUN Rainbow Home. I moved to Tiruppur (another district in Tamil Nadu) for my education. Everyone living with

me in the hostel went to their homes due to the

lockdown. I was alone there. I felt bad about it. From there, somehow, I came back to the home (Rainbow Home). I was quarantined for 15 days at the home. I spent my birthday in quarantine and felt really bad. I missed going out, being with friends and going to college. I study fashion designing and hence I taught other children in Rainbow Homes to stitch their own masks. I always wear a mask wherever I go.

Amutha, like she recounted was in Tiruppur. The state and home team had to get permissions from multiple authorities to get a travel pass for her. After much persuasion, the state team finally got a travel pass, arranged a car and bought Amutha to the home. This was a special intervention made by the state team in April 2020.



#### **Dhanalakshmi** fought the infection bravely

My name is Dhanalakshmi. I study in first year of college. I came to know of covid-19 when I was at Rainbow Home. I learnt about

its symptoms and preventive measures. All children in the home were tested for covid-19. I was detected positive and was isolated. I was very sad because of this. I was isolated for 15 days. After completing isolation, I was welcomed back to the home. Everyone celebrated. I was very happy to meet them after a long time. After that, I started taking proper care of myself and helped my friends do the



same. I started reading the newspaper to find out more about covid-19.

Dhanalakshmi was the first young adult in Rainbow Homes to be isolated in a government isolation centre. She provided advice on what diet was being given to her at the centre, based on which, similar diet was provided to other

infected children in isolation at the Rainbow Homes. Even though she was infected, she faced the challenge bravely and chose to provide support to other infected children at the home by guiding them on do's and don'ts.

#### धनलक्ष्मी ने हिम्मत से लडी इंफेक्शन से लडाई

धनलक्ष्मी कॉलेज में फर्सट ईयर में पढ़ती है। वह रेनबो होम में ही थी जब इस बीमारी का दौर शुरू हुआ। होम में सारे बच्चों का टेस्ट हुआ। उसमें धनलक्ष्मी पॉजिटिव निकली और उसे 15 दिन के लिए सरकारी केंद्र पर आइसोलेशन में रखा गया। वह बिलकुल ठीक होकर लौट आई। उसने हिम्मत से काम लिया और लौटने के बाद उसने बाकी बच्चों को बताया कि क्या-क्या किया जाना चाहिए और क्या नहीं। उसके अनुभव के आधार पर ही होम में भी बच्चों की डाइट तैयार की गई और उन बच्चों की भी देखरेख की गई जो होम के भीतर ही आइसोलेशन में थे।

#### **Patna**



#### Champa Kumari 10th std

Gharaunda Rainbow Home, Anisabaad, Patna

## आसान नहीं है ऑनलाइन पढ़ाई

रा सपना था कि 10वीं क्लास में स्कूल जाकर और कोचिंग करके अच्छी तैयारी करूंगी ताकि अच्छे नंबर से पास हो सकूं। लेकिन कोविड-19 के कारण नहीं हो पाया। ऑनलाइन क्लास में ही हम लोगों का सेलेबस पूरा कराया जा रहा है। स्कूलों में होने वाली सारी एक्टीविटीज ऑनलाइन हो रही हैं। लेकिन ऑनलाइन क्लास में काफी कठिनाई होती है जैसे बिजली न होना नेटवर्क की समस्या और स्मार्टफोन की अनुपलब्धता। हालांकि ऑनलाइन क्लास करने से समय की भी बचत होती है। स्कूल जाने पर अक्सर सरकारी स्कूल में विषय पीरियड में कभी टीचर नहीं आते है। तब भी बच्चों को स्कूल में ही रुकना पड़ता है। होम में कोविड से बचने के लिए सारे उपाय के गए हैं। सुबह-शाम हम बच्चों का बुखार मापा जाता है। सब लोग शारीरिक दूरी का भी ख्याल रखते हैं। लॉकडाउन में आय व नौकरी के संकट के बाद रेनबो होम टीम ने हमारे परिवारों को महीने भर का राशन भी दिया।

## Online classes are not at all easy

T dreamt that in the 10th class, I will go to school Land coaching to prepare myself well for the good numbers. But it was not possible due to COVID-19. Now we have to finish our syllabus in the online classes. All school activities are also done online. But online classes aren't so easy. There are many problems like no electricity or network or availability of a smartphone. Online classes sometimes also save time, though. In many government schools, teachers don't come to class, but still students have to stay in school doing nothing. Rainbow Homes have taken many steps to save children from any infection. We undergo daily checkups and also maintain proper distancing.



ரெயின்போ சாத்தி

రెయిన్బో

रेनबो साथी

RAINBOW SATHI

RAINBOW SATHI

**Patna** 

# स्कूल व दोस्तों की याद आती है

🔁 स महामारी ने कई लोगों की जान ले ली है तो कई लोगों को बेरोजगार व बेसहारा 🔁 छोड़ दिया है। इसका सबसे ज्यादा असर गरीब लोगों पर पड़ा है। कोविड-19 के कारण हमारे स्कूल बंद हो गए हैं और हम अच्छी तरह से पढाई नहीं कर पा रहे हैं। हमें तो <mark>अपने स्कुल व दोस्तों की भी कमी अखरती है। हमें होम की सारी टीम से बी शारीरिक दुरी</mark> <mark>बनाकर रकनी पड़ती है। इससे भी कई बार अकेलापन महसूस होने लगता है। अपने आपको</mark> <mark>व्यस्त रखने के लिए हम ऑनलाइन क्लास का सहारा लेते हैं।</mark> लॉकडाउन के बावजूद हम कई सारी गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं। इससे हम खुश रहते हैं और उत्साह बना रहता है। <mark>लॉकडाउन के कारण हमारे भी परिवारों में कई लोगों का रोजगार छिन गया और आय न</mark> <mark>होने के कारण घरों में बड़ी दिक्कत का सामना करना पड़ा। रेनबो होम की टीम ने हमारे</mark>

परिवारों को राशन किट, कंबल व रोजमर्रा की बाकी चीजें उपलब्ध कराई।



This pandemic has taken many lives and left many **L** people jobless. All this has affected poor people the most. Due to the COVID-19 our school have been closed and we are unable to study properly. We miss our schools and friends a lot. We have to maintain proper physical

distance from our sisters, mothers and other team members. Sometimes we feel lonely because of this. To keep ourselves busy, online classes are conducted. We also remain involved in various activities even during lockdown. This keeps us motivates and happy. During lockdown many of our family members lost their livelihood. Rainbow Homes has provided our families with ration kits, blankets and other necessary items of daily need. This was very encouraging.



Khilkhilahat Aman Rainbow Home, Patna

## पहले कभी हैंडवाश का इस्तेमाल नहीं किया

जब देशभर में लॉकडाउन लगा तो पार्वती देवी के सारे कामकाज रुक गए। तब उन्हें रेनबो होम की टीम ने राशन उपलब्ध कराया। वह उनके लिए परिवार को चलाने में काफी मददगार साबित हुआ। उन्हें पुनपुन में उनके घर के नजदीक ही यह राशन उपलब्ध कराया गया। राशन में आटा, चावल, तेल, मसाले, सत्तु, आलू, प्याज व रोजमर्रा की बाकी चीजें शामिल थीं। यह सरा सामान पाकर वह काफी खुश थीं। उन्होंने कहा, च्योंने पहले कभी हैंडवाश का इस्तेमाल नहीं किया था। हम तो हमेशा साबन या <mark>डिटर्जेंट से ही हाथ धोते थे। यह सारी मदद बड़े मौके से मिली। मैं</mark> बिना किसी चिंता के बच्चों को भरपेट खाना दे सकूंगी। ज्ज उन्होंने रेनबो होम टीम का शुक्रिया अदा किया और इस बात पर खुशी जताई कि बच्चे ऐसी सुरक्षित जगह पर हैं।

#### Never used a liquid hand wash before

uardian Parvati Devi had all her work Ustopped when lockdown was imposed in

the whole country. Then she was provided ration through Rainbow Home team. She found it very useful to run her family. She was provided with the ration at Punpun near her home. Ration included flour, rice, oil, spices, sattu, potatoes, onions and toiletries. She was very happy to receive all this. She said, "we never used liquid handwash soap. We would always use a soap or a detergent. This help has been very timely, as it would help me in feeding my children without any worry. I can give them a full meal." She was very grateful to Rainbow Home team as well as also happy that her kid is at such a safe and caring place.



# उम्मीद से ज्यादा मिली मदद

व संगीत देवी के पास फोन आया और उन्हें घरौंदा विकासनाथ रेनबो होम आकर राशन ले जाने को कहा तो उन्हें नहीं पता था कि उन्हें क्या मिलेगा। उन्होंने तो यही सोचा कि जिस तरह से बाकी सभी लोग दे रहे हैं. उसी तरह से दो-चार किलो राशन मिल जाएगा। लेकिन जब रेनबो होम की टीम राशन देने उनके घर आ गई तो उनकी आंखों में खुशी के आंसू आ गए। उन्हें तो यह यकीनहीं नहीं हुआ कि वह सारा राशन उन्हीं के लिए था। वह काफी खुस थी और संतृष्ठ भी कि अब वे बच्चों को ढंग से खाना खिला सकेंगी। संगीता का काम रुक गया था क्योंकि वह कूड़ा उठाती थी और लोग इंफेक्शन के डर से उन्हें घर नहीं आने दे रहे थे। जिस दुकान को वह कूड़ा बेचती थी. वह भी कोरोना के कारण बंद हो गई थी। इन सारी वजहों से वह काफी परेशान थीं लेकिन उन्हें रेनबो होम से उम्मीद से ज्यादा मदद मिल गई। वह खुश थीं कि उनकी बच्ची ऐसी जगह पर रहकर पढाई कर रही है।

## More than what expected

Then Sangeeta Devi's phone rang to ask her to come and collect ration from Gharaunda Vikasnath Rainbow Home, she was not sure what she would be getting. She thought that just 2-4 kilos of ration is what she will get, just as everyone else was giving. Then the Rainbow team came to her house to provide her the ration, then she had tears of joy in her

eyes. She couldn't believe that all that ration was for her. She was very happy and relieved that now she would be able to feed her children properly. Sangeeta was now not able to go on her work of collecting garbage as the residents don't let her in because of the fear of COVID. Even the shop, where she used to sell the garbage was closed due to pandemic. Due to all this she was quite worried, but the help from Rainbow Home was more than expected. She was happy and relieved that her daughter was living with such a team.



ರೈನ್ಬೋ

ரெயின்போ சாத்தி

გ ფ

రెయిన్బో

रेनबो साथी

RAINBOW SATHI

রেইনবো সাখী

ගිගෙ

ரெயின்போ சாத்தி

ক জ

రెయిన్బో

रेनबो साधी

SATHII

RAINBOW

# When All Joined Hands To Help Others

Coronavirus pandemic and resultant lockdown imposed on the nation had a very catastrophic effect on most of the people, specially those from the marginalised sections. Jobs and all means of income were lost. Incidentally, all our children belong to such families. Rainbow Home teams across the country came forward in this crisis to help the families and persons in distress. A glimpse of their effort in this photo-feature.



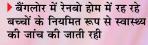
के एक सदस्य दिल्ली में एक बस्ती में राशन वितरित करते हुए

A member of Delhi **Rainbow Homes** Team providing dry ration to a physically challenged lady.

की एक सदस्य रेखा देवी को उनके घर पर राशन पहुंचाती हुई

A member of Patna Rainbow **Homes Team** providing dry ration to Rekha Devi at her home. में हाथों की अच्छे से सफाई के तरीके सीखते हुए बच्चे

Children learning about hand hygiene during COVID pandemic times at **Rainbow Homes in** Chennai.



Regular health check-ups by medical staff were done for the children at Bengaluru Rainbow Homes.



RAINBOW SATHI ● रेजबो साथी ● ठिయर्रिध रोजि ● जिल्लामिक विकास कार्के ● जिल्लामिक विकास कार्कि ● जिल्लामिक विकास कार्यों विकास कार्यों क

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिळार्रिधी केर्फ़ ● जिज्ञाधीलंखिया मार्क्के ● ज्रुक्तांकर रूक् ● (त्रहेनवा प्रार्थी

Children at Chennai Rainbow Home learn through video on following precautions for COVID.



े बैंगलोर में रेनबो होम के बच्चे उपयुक्त शारीरिक दूरी ब<mark>नाकर</mark> पढ़ाई करते हुए

at Bengaluru Rainbow Home.

রেইনবো সাখী

ගිගෙ

ರೈನ್ಬ್ಯೋ

சாத்தி

ரெயின்போ

মু জ

రెయిన్బో

. साथी

रेनबो

SATHI

RAINBOW

Studies with proper physical distancing

चेन्नई में रेनबो होम टीम के फील्ड वर्कर्स ओरिएंटेशन मीटिंग करते हुए Orientation meeting of field workers of Chennai Rainbow Homes team.





वैंगलोर रेनबो होम टीम के सदस्य जरूरतमंद लोगों के बीच जाकर राशन वितरित करते हुए Bengaluru **Rainbow Homes** team distributing dry ration to the needy people.



चेन्नई में फील्ड वर्कर्स ने बस्ती में जाकर लोगों से उनकी परेशानियों व जरूरतों के बारे में जाना রেইনবো সাখী

ரெயின்போ சாத்தி

মু ক্র

రెయిన్బో

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

Field workers in Chennai went to bastis to talk to people about their problems and needs.



 चेन्नई के पेर्बूर इलाके में जरूरतमंदों को राशन उपलब्ध कराते रोनबो होम के फील्ड वर्कर्स Field workers distributing provisions to needy at Arunthayhiyar Nagar, Perambur in Chennai.



▶ दिल्ली रेनबो होम टीम के एक सदस्य दिल्ली में एक

A member of Delhi Rainbow Homes Team

बस्ती में राशन वितरित करते हुए



बैंगलोर में नीड बेस इंडिया स्रोह घर के बच्चे अपनी पेंटिंग्स के साथ

Students at **Need Base India Sneh** Ghar in Bengaluru with their drawings.

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिळार्रिय रेन्क्रे ● जिज्ञाधीलंडिया मार्क्रेक्री ● ठुल्थिल रूक्ष ● (त्ररेन्दा प्रार्थी

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिळार्रिय रोज्दे ● निज्ञाधीलंडिया मार्केकी ● न्रैर्ज्यंक रूक् ● (त्रहेन(ता प्राणी

RAINBOW SATHI

রেইনবো সাখী

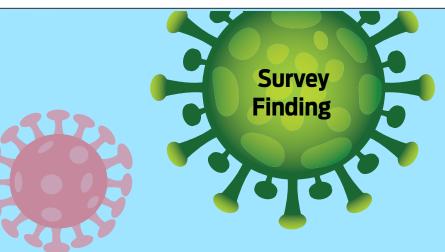
ரெயின்போ சாத்தி

ফ জ

• రెయిన్బో

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI



# **REACHING OUT** TO PEOPLE FOR TARGETED INTERVENTIONS

telephonic survey administered with 670 families of children under ▲ RHP across 10 cities (Hyderabad, Ananthapur, Kolkata, Pune, Mumbai, Patna, Bangalore, Chennai, Delhi & Ranchi), to capture their present status of living conditions, health conditions, availability of food, occupational characters, incidences of abuse or violence. This survey captures the families' concerns and lists the expectations from Government and others to ease their struggles for survival at this time of crisis.

#### **Short term Impact of COVID on** families: Key findings

#### **Awareness on coronavirus**

Most families had some awareness about the disease and were able recall at least some of the symptoms and methods of spreading (54 percent), precautionary measures and hygiene (83 percent). However, 17 percentage of families didn't have any information about the disease. Nevertheless, all of them expressed concerns about the safety of their families, especially children, with regards to the outbreak.

#### Effects on income and living conditions of the households

The average income of the households before lockdown was Rs.7000 per month. In more than half of the households, only one person was earning income, mostly employed in the unorganized sector. 81 percent of the families reported having lost their means to earn income because of the lockdown. With no income, families had to rely on their savings. However,

many studies have noted that the possibility of saving money while working in an unorganized sector is very dim. This points towards the fact that all of the families had almost nil savings to use during the lockdown period. While the lockdown in the country lasted for 68 days, 57.9 percent of the families mentioned their savings can last only for about 7-14 days while another 21 percent mentioned that it can last for a maximum of 30 days. The phases of unlock was differently planned across the states, with some going into

more number of days under lockdown. Even after unlock there was no guarantee of jobs or possibility of income. Loss of income diminished the basic amenities of these households and had an effect their living conditions. While the families existing conditions of

living was by itself not up to the desired standards, the loss of income is expected to only have pushed them towards worse conditions. Families struggled to manage their expenses for food, water, accessing public toilets, and rent.

- ► A total of 43 percent of the families lived in rental accommodations. Of these, 79 percent could not pay rent for the months of March and April 2020; 45 percent of these families mentioned that they have a good chance of being evicted if they continue to not pay rent.
- ▶ 11 percent of the sample were living on the streets before the lockdown. But with lock down, number of people living on street drastically dropped to 1 percent. These families had to find alternate accommodations such as moving back to villages, staying with a friend or relative in same city or different cities, moving to

- temporary shelter etc.
- ► Approximately, 30 percent of the families used public or community toilets and 62 percent used public taps, hand pumps or community wells for drinking water meaning which they had to come in contact with other families during use of these facilities, thereby increasing their risk exposure to the virus even during lockdown
- ▶ Often, it was not possible for these families to follow physical distancing. Adding to this was the fact that while most of the families lived in very small spaces and had to share it with four number of household members on an average. This must have been particularly hard for children with no conducive space for play or study.
- ▶ 29 percent of the families reported spending money for drinking water, on top of other expenses such as food and rent. Similarly, 12 percent of families reported of using pay-and-use toilets which posed additional financial burden to them due to loss of income.
- ▶ When asked how families manage to meet all these expenses during lockdown, 42 percent reported having taken loans from employers, friends or relatives or the local money lender against hefty interest rates; 5.6 percent sold assets such as jewelry; 5.8 percent bought food on credit.

#### Effects on access to health and medication

26.5 percent of the families reported having chronic illnesses such as cancer, cardiovascular diseases, diabetes, TB, HIV/AIDS, out of which 78 percent were undergoing some form of medication or









•

RAINBOW SATHI

রেইনবো সাখী

ರೈನ್ಬ್ಯೋ ಸಾಥಿ

ரெயின்போ சாத்தி

•

రెయిన్బో

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

treatment before the lockdown.

While 32 percent could not afford to continue treatment during lockdown because of lack of income. most reported that their treatment was either delayed or paused in some way. 70 percent of the families reported having medicines for only about a month after which are expected to either pause or stop their treatments. 13 percent of the

sample reported disability in some form and 28 percent of the families reported being in an accident (indoors or outdoors) during the lockdown. With the cancellation of public transport, this could have only meant that there were additional barriers in accessing medical help.

#### Effects on access to food and nutrition



With loss of income and deprivation of savings, hunger and starvation became very evident in these families.

During the lockdown, about 46 percent of the families reported eating

only two meals a day, whereas another 7 percent reported eating only one meal per day. Roughly, 19 percent of the families, at the time of interview reported complete starvation for 2 days or more until receiving supports with food or dry ration. Both central and state governments announced free distribution of provisions through the Public Distribution System (PDS).

Various non-government and volunteer groups also

stepped up to provide relief. Overall, 31

percent of the families reported receiving cooked food support whereas 89 percent of the families received dry rations at least once during the lockdown. The pattern of relief provided and the reach it had is as following:

#### A. Dry provisions and cooked food as relief:

- ► Of the 89 percent families who received dry provisions as support over two months, 37 percent families, on an average, received from government sources and 64 percent families, on an average received from other sources such as NGOs, volunteer groups etc.
- ▶ 43 percent of the families had no identification documents and 64 percent did not have a ration card or had one in an incorrect address. None of these families were able to receive any support from the PDS.
- ► The amount of provisions distributed to each family was expected to last for only about two months on an average. Overall, 45 percent of the families, on an average, received provisions only once in the first two months of the lockdown, whereas, on an average, 25 percent of the families received at least twice.
- ► Common items distributed as dry provisions were rice, dal, wheat, sugar and oil indicating that nutritional intake of the families in terms of a well-balanced diet would have taken a hit since the lockdown.
- ▶ 11 percent families did not receive any dry provisions from any sources.

### The top three cause of worry for the families

60.5% children's future

51% income after the lockdown 42.8% getting sufficient food to eat

- ▶ 31 percent of the families reported receiving cooked meals at least once. Of them, on an average, 11 percent families received cooked meals twice or more days in a week during lock down
- ▶ Even though majority of the families received support in some form, the relief measures were not sufficient to last the entire lockdown as 80 percent families received support in March 2020 but only 50 percent received support in April 2020.

#### B. Other supports as relief:

- ▶ It is also important to note that the majority of the support focused on providing food but ignored additional requirements of the families such as medicines, hand washing liquids or sanitizers, and sanitary pads etc.
- ► Only 27 percent of the families reported receiving other supports such as, medicines, cash, clothing, shelter, counselling, and protection from violence.
- ▶ The central and state governments announced schemes in which money would be credited into the beneficiaries' accounts. However, only 39 percent reported receiving such money.

Effect on violence and abuse in families Various reports mentioned increase in domestic violence and abuse



during the lockdown. 9 percent of the women interviewed reported having undergone either emotional or physical abuse or both. Out of this, 69 percent were caused by the spouses and 25 percent were by other relatives in the family. Out of the total 9 percent who reported abuse, 47 percent reported physical abuse and 88 percent reported emotional abuse. While only certain women reported in the interview about being abused, it is quite possible that many women did not want to disclose their experiences of abuse fearing a consequence of disclosing it.

#### **Concerns and expectations of families**

As the pandemic has put the world in unprecedent times, majority of the families reported being disturbed or worried because of the uncertainties unveiled since the lockdown. 51.9 percent reported having no clear idea on when things would go back to normal, whereas 32.2 percent thought it would take 6 months or more. The top three cause of worry for the families were children's future (60.5 percent); means of income after the lockdown (51 percent) and getting sufficient food to eat (42.8 percent). Accordingly, top 3 expectations of support of the families were food (63.5 percent families); some form of income or job (31.6 percent) and financial assistance from the government (23.1 percent). However, not all was grim for the families as at least 23.2 percent expressed confidence that they would somehow find some form of job after the lockdown and 47.4 percent expressed hope that the government or organizations such as RFI would provide some support to help them stand up on their feet again.



ಸಾಥಿ

ரெயின்போ சாத்தி

रेनबो साथी

RAINBOW SATHI

•

RAINBOW SATHI

# कोविड का असर

#### रेनबो होम पोगाम के तहत आने वाले बच्चों के परिवारों की स्थिति का आकलन

र श के दस शहरों (हैदराबाद, अनंतपुर, कोलकाता, पुणे, मुंबई, पटना, बैंगलोर, चेन्नई, दिल्ली व रांची) में रेनबो होम कार्यक्रम (आरएचपी) के तहत आने वाले 670 बच्चों के परिवारों से एक टेलीफोन सर्वे किया गया ताकि महामारी व लॉकडाउन के बाद के हालात में उनकी जीवन स्थिति, सेहत, भोजन की उपलब्धता, कामकाज के हाल और शोषण व हिंसा की घटनाओं के बारे में विस्तार से जाना जा सके। इस सर्वे से परिवारों की चिंताएं सामने आई और यह भी पता चला कि संकट के इस दौर में जिस संघर्ष का वे सामना कर रहे हैं. उससे उबरने के लिए मदद पाने में उनकी सरकार व बाकी संस्थाओं से क्या अपेक्षा है।

#### परिवारों पर असर: मुख्य निष्कर्ष

#### कोरोनावायरस की जानकारी

ज्यादातर परिवारों को बीमारी के बारे में थोडी जानकारी थी और उसके कुछ लक्षणों, एहतियाती उपायों र साफ-सफाई के तरीकों के बारे में पता था। हालांकि 17 फीसदी परिवार ऐसे भी थे जिन्हें बीमारी की जानकारी नहीं थी। लेकिन अपने बच्चों की हिफाज्त को लेकर तो सारे ही चिंतित थे।

#### परिवारों की आय और जीवन स्थिति पर असर

लॉकडाउन से पहले इन परिवारों की औसत आय 7000 रुपये प्रति माह थी। आधे से ज्यादा परिवारों में केवल एक ही व्यक्ति कमाऊ था और उसका रोजगार भी असंगठित क्षेत्र में ही था। लेकिन लॉकडाउन के कारण 81 फीसदी परिवारों की आय का जरिया खत्म हो गया। लिहाजा ज्यादातर को अपनी बचत से काम चलाना पड़ा, लेकिन तमाम अध्ययन कहते हैं कि असंगठित क्षेत्र में काम करते हुए कोई कायदे की बचत कर पाना तकरीबन नामुमिकन होता है। भारत में पुरा लॉकडाउन 68 दिन तक चला जबिक 57.8 फीसदी परिवारों का कहना था कि उनकी बचत महज एक से दो हफ्ते का खर्च चला पाने के लिए ही पर्याप्त थी। 21 फीसदी परिवार ऐसे थे जिनके पास महीने भर का खर्च चलाने लायक बचत थी। यह तो तब था जब लॉकडाउन की अवधि और सख्ती हर राज्य में अलग-अलग थी, और लॉकडाउन खत्म हो जाने के बाद भी काम तुरंत मिलने या आय होने की तो कोई गारंटी नहीं थी।



आय न होने के कारण इन परिवारों की बुनियादी जरूरतों की चोजों पर भी असर पड़ा। पहले ही इनका जीवन स्तर वांछित स्तर से काफी कम था. आय खत्म हो जाने ने तो इन्हें बेहद तंगहाली की तरफ धकेल दिया। परिवारों को किराये, भोजन, पानी और सार्वजनिक शौचालयों के इस्तेमाल आदि का खर्च जुटाने में भी खासी मुश्किल का सामना करना पडा।

- इन परिवारों में से 43 फीसदी किराये की जगहों पर रह रहे थे और उनमें से 79 फीसदी मार्च व अप्रैल के महीनों में किराया देने की स्थिति में नहीं थे। इनमें से भी 45 फीसदी का यह मानना था कि अब उन्होंने किराया न दिया तो बहुत मुमिकन है कि उन्हें घरों से बाहर निकाल
- ▶ सैंपल सर्वे के 11 फीसदी परिवार लॉकडाउन से पहले ही फुटपाथ पर रह रहे थे। लेकिन लॉकडाउन के बाद फुटपाथ पर पहने वालों की संख्या महज 1 फीसदी रह गई। बाकी सभी को दूसरे ठिकाने खोजने पडे, गांवों को लौटना पड़ा, दूसरे शहरों में दोस्तों-नातेदारों के यहां जाना पड़ा या अस्थायी आश्रयगृह तलाशने पड़े।
- ►इन परिवारों में से 30 फीसदी सार्वजनिक या सामुदायिक शौचालयों का इस्तेमाल करते थे और 62 फीसदी पीने के पानी के लिए सार्वजनिक नलों, हैंडपंप आदि का इस्तेमाल करते थे। दोनों ही मामलों में उनके लॉकडाउन के दौरान भी दूसरों के संपर्क में आने और संक्रमण का खतरा झेलने की संभावना बहुत ज्यादा थी।
- ▶इन परिवारों के लिए शारीरिक दूरी बनाकर रखना बहुत मुश्किल था। ज्यादातर परिवार बहुत छोटी जगहों में रहते थे जिसका इस्तेमाल



औसतन परिवार के चार लोग करते थे। जाहिर था कि बच्चों के लिए खेलने या पढ़ने की कोई जगह मिल पाना तो लगभग नामुमिकन था।

- ▶ 29 फीसदी परिवारों को भोजन व किराये के अलावा पीने के पानी पर भी धन खर्च करना पड रहा था। इसी तरह 12 फीसदी परिवार भुगतान पर शौचालयों का इस्तेमाल कर रहे थे। इससे एक तो आय का जरिया खत्म हो गया था दूसरी तरफ अतिरिक्त आर्थिक बोझ आ खडा हुआ था।
- ▶जब परिवारों से पूछा गया कि लॉकडाउन के दौरान वे खर्च कैसे चला रहे थे तो 42 फीसदी ने बताया कि उन्होंने अपने नियोक्ताओं, दोस्तों, रिश्तेदारों या भरी ब्याज दर पर स्थानीय सुदखोरों से पैसा उधार लिया था। 5.6 फीसदी लोगों को तो जेवरात आदि बेचने की नौबत आ गई थी और 5.8 फीसदी ने उधार पर खाने-पीने का सामान लिया था।

#### स्वास्थ्य देखरेख व दवाइयों की उपलब्धता पर असर

सर्वे में शामिल परिवारों में से 26.5 फीसदी कैंसर, दिल के रोग, डायबिटीज, टीवी, एचआईवी आदि बीमारियों से ग्रस्त थे जिनमें से 78 फीसदी लॉकडाउन से पहले से किसी न किसी तरह का इलाज करा रहे थे। आय चली जाने के कारण उनमें से 32 फीसदी के लिए लॉकडाउन में इलाज करा पाना मुमिकन नहीं रहा। 70 फीसदी परिवार ऐसे थे जिनके पास केवल महीनेभर के लिए ही दवाएं बची थी। जाहिर था कि उसके बाद उनका इलाज रुक जाना तय था। परिवारों में से 13 फीसदी को किसी किस्म की अपंगता थी और 28 फीसदी को लॉकडाउन के दौरान किसी हादसे का शिकार होना पड़ा था। सार्वजनिक परिवहन के साधन बंद होने के कारण ऐसे में चिकित्सकीय मदद लेने के लिए भी उनपर अतिरिक्त आर्थिक बोझ ही पडा होगा।



## Special Cleaning And **Preventive Measures**

↑ mid chaos and panic due to the ongoing Aof pandemics, special cleaning and preventive measures are the main thing to keep us away from the virus by maintaining the home and surrounding neat and clean. Due to the pandemics where many lives have been impacted and we addressed the issues to the children in advance when it started in the other countries. Which much awareness provided to the children, this also helped the children to be at ease and keep them away from stepping out and cautious.

#### Team who stayed at the home with the children keeps monitoring the cleanliness of the home such as:

► All the rooms and corridors 4 times a day are

- clean with cleaning detergents.
- ▶ Dustbins are clean every day after throwing the garbage.
- ► The garbage's are taking care by the watchman throwing whenever it's filled and clean it.
- ► After the vegetables brought are wash properly and then keep it in a proper place.

#### We also follow the preventive measures and practice in both the homes Rainbow and **Sneh Ghar**

- ▶ We make sure children bath, wash their clothes on daily basis
- ► Clothes are sundry
- ► Children washing their hands regularly and frequently.
- ► Social distancing practice at least 1meter (3 feet) distance between yourself and anyone who is coughing or sneezing
- ► Taught the children to avoid touching their eyes, nose and mouth.
- ► Warm drinking water being served thrice a day.
- ► Hot Food are served
- ► Fruits and drinks mixed with ginger and honey / lemon.
- ► Vitamin C tablets gave to all the children to help boast their immune system.
- ► Health is being checked daily for, such as fever, cold, cough and throat pain and other health issues.



சாத்தி

ரெயின்போ

ফু জ

రెయిన్బో

साधी

रेनबो

SATHI

RAINBOW

ফু জ రెయిన్బో

रेनबो साथी

RAINBOW SATHI

# FIGHTING THE NATURE'S FURY

Even when everyone was trying to overcome the effects of the COVID-19 pandemic and subsequent lockdown, Hyderabad had to face another crisis in form of severe floods in month of October 2020 because of unexpectedly heavy rainfall. But as we always lead from the front, Rainbow Homes Programme made all efforts to reach affected families and provide them whatever relief possible.



- बाढ़ का पानी निचले इलाकों में रहने वाले पिरवारों के घर में घुस गया जिससे उनके लिए बड़ी
- ▶ Flood water entered housed of families living in low lying areas and made things
- very difficult for them.





प्रभावित परिवारों के लिए

राहत पाना बहुत मुश्किल हो

During COVID times,

it was very difficult for affected families to get

कोविड के समय में बाढ़

जाने की जगह थी और न ही पाने का कोई

People had no where to go and no means to get food to survive themselves in time of flood.

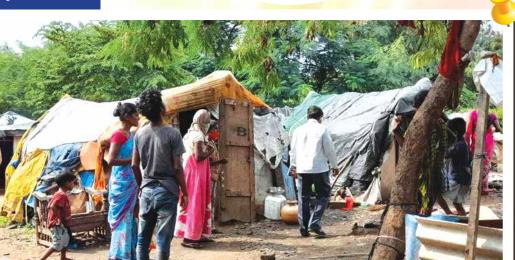


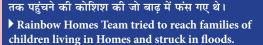
Akkeshwar Rao garu participated and

distributed dry ration kits to the flood

effected families.

रेनबो होम टीम ने अपने यहां रहने वाले बच्चों के उन परिवारों तक पहुंचने की कोशिश की जो बाढ़ में फंस गए थे।







# — THIS CRISIS — **TAUGHT US MANY THINGS**



রেইনবো সাখী

ரெயின்போ சாத்தி

ফু জ

రెయిన్బో

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

अमीना, १९ वर्ष, दिल्ली

लॉकडाउन में नौकरी छोडनी पडी लॉकडाउन के दौरान हमें कई दिक्कतों का सामना करना पडा। उन्नति हॉस्टल में रहते हुए ही मुझे एनआईओएस की क्लास लेनी पडी। ऑनलाइन क्लास की वजह से शुरू में तो कुछ विषयों को समझने में बडी दिक्कत हुई। लेकिन फिर धीरे-धीरे सब मैनेज हो गया।

हमारी सॉफ्ट स्किल्स की ट्रेनिंग भी ऑनलाइन ही चलती थी। हमें करियर से जुड़े वीडियो दिखाए जाते थे और ननकी दी इस बारे में काउंसलिंग भी करती थीं। लॉकडाउन की वजह से जॉब से जुड़ी कई दिक्कतें आ रही थीं। फ्यूचर्स टीम इस काम में बच्चों की मदद कर रही थी। नौकरियों की कमी थी और जो मिल भी रही थीं वे बहुत दूर-दूर थी। जैसे कि मुझे भी एक नौकरी मिली लेकिन वह बहुत दूर थी, उसमें तो रोज हॉस्टल से आने-जाने में ही बहुत खर्चा हो जाता। मैंने सर से बात

की तो उन्होंने काम की जगह के पास ही कमरे व खाने-पीने का इंतजाम करा दिया। तब मैं हर हफ्ते अपने ऑफ के दिन हॉस्टल आती थी लेकिन उसमें भी एक बार के आने-जाने में 500 रुपये लग जाते थे। तब मैंने ऑफ पर आना भी बंद कर दिया। फिर जब मेरी तनख्वाह नहीं बढ़ी तो तीन महीने बाद मैंने नौकरी छोड दी और हॉस्टल वापस आ गई।

#### Had to leave the job because of lockdown

We had to face many problems during lockdown. Online classes were difficult in the beginning but later on things got managed. Jobs were very few. I got a job at a very far away place but commuting was very costly. I then got a room close to my workplace and would come hostel once every week. But, when my salary was not increased, then I left the job after three months.





Rahul Dhanrai Delhi

#### **Kept calm and motivated**

The COVID-19 pandemic changed our lives in many ways. I felt its many impacts on my life and I tried to overcome from this. Before the pandemic, I had made many future plans about my career but pandemic toppled everything. Even after passing 12th exams, I found myself demotivated

on what to do next. In that situation, then our home staffs and counsellor took session regularly to motivate me. Due to lockdown I lost my interest in everything which adversely effected my career plans too. I was totally confused. Then our home took individual

sessions and engaged us with guided movies, career counselling and different types of educational talks and additional ways to explore our thoughts and plans about career. The best thing was the mental and emotional support which I received from our home team. Our Futures team coordinator helped me to find a job which further helped me in stabilizing myself. I became punctual about the time cost and management. The financial support coming with the job kept me calm and motivated.

खुद को शांत बनाए रखा

कोविड महामारी ने हमारी जिंदगियों को कई तरीके से बदल डाला। मुझे भी इसका असर महसूस हुआ और मैंने उससे पार पाने की कोशिश की। मैंने 12वीं पास करने के बाद की कई योजनाएं बनाई थीं लेकिन इस संकट ने सबकुछ उलट-पुलट कर डाला। मैं बहुत हताश और भ्रमित था कि आगे क्या होगा। हर चीज से मेरी रुचि खत्म हो गई। लेकिन फिर रेनबो होम की टीम ने इससे उबरने में मदद दी। मेरे लिए काउंसलिंग के सेशन चलाए गए। कैरियर के बारे में भी बताया गया। मुझे खासा भावनात्मक सहयोग मिला। फ्यूचर्स टीम ने मेरे लिए नौकरी ढुंढने में मदद की। नौकरी मिलने पर स्थिति बदल गई। मेरी दिनचर्या नियमित हो गई। दिमाग में भी स्थिरता आ गई और फिर नौकरी से जो आर्थिक संबल मिला, उसने भी मुझे मुश्किलों से उबरने में मदद दी।

Mohammad Parvez, Delhi

#### Pandemic was the worst nightmare we had

When lockdown was imposed because of Coronavirus pandemic I went back to my home in Bawana in end of March. At that time, we had limited ration at home as my parents had also not received their salary from the factory where they work as labourers. Barely after two months our ration and all savings were finished. In that critical time, we got support from Rainbow Home team in form of ration which helped us lot. We received another lot of ration after one and half months. That help was so timely, that we couldn't have survived without it. There was no one else, whom we could have asked for help, as all our neighbours were also facing the same crunch. It

was the worst nightmare of our life and we wanted it to pass away soon. Initially everyone thought that it is going to end soon but after two months we came to realised that it will never end. In such a bad time, only the support from Rainbow Homes team kept us motivated. Everyone wishes for this pandemic to end soon so that we can again lead our normal lives. But these times also teach us a lot about humanity and ways to help others.

#### महामारी एक डरावना खुवाब था

कोरोना महामारी के कारण जब लॉकडाउन लग गया तो मैं मार्च के अंत में बवाना में अपने घर चला गया था। उस समय हमारे घर में बहुत कम राशन बचा था। मेरे माता-पिता फैक्टरी में काम करते थे, वहां से उन्हें तनख्वाह नहीं मिली। थोड़े दिनों में घर में जो बचत थी, वह भी खत्म हो गई। ऐसे नाजुक मौके पर हमें रेनबो होम की टीम से मदद मिली। वहां से राशन मिला। फिर डेढ़ महीने बाद राशन की दूसरी किश्त भी मिल गई। यह मदद इतनी जरूरी थी कि उसके बिना हमारे लिए डर चलाना व पेट भरना मुश्किल हो गया था। चुंकि हमारे पड़ोसी भी इसी तरह के संकट का सामना कर रहे थे, इसलिए हम आस-पड़ोस से भी मदद नहीं मांग सकते थे। यह हमारे जीवन का सबसे खराब दौर था।

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिయर्रिध रुक़ ● जिल्लाका कार्क्ष ● जुरुधार रुक् ● (त्रहेनवा प्रार्थी

রেইনবো সাখী

ಸಾಥಿ

ರೈನ್ಯಬೋ

ரெயின்போ சாத்தி

lacktriangle

გ ფ

ටිගාව්න්

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

রেইনবো সাখী

ගිගෙ

ರೈನ್ಬ್ಯೋ

ரெயின்போ சாத்தி

రెయిన్బో

साधी

रेनबो

SATHI

RAINBOW

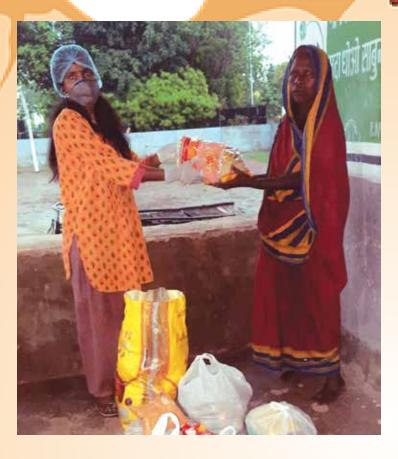
**Patna** 



11 yrs. 7th std Khilkhilahat Aman Rainbow Home, Patna

# **During Pandemic** care is the only mantra

Tenjoy living here at the home and I **L**have been taken care of properly by the mother and sisters during these times of pandemic. COVID-19 test was conducted for all of us, which gave us a feeling of safety. We have been briefed about all the precautionary measures and information needed to keep ourselves safe and protective. Necessary care is being taken to provide us with essentials like lemon water (twice in a day), thermometer, oximeter, masks, gloves and hand sanitizer etc. We follow the norms of social distancing. Our rooms are sanitized once a week. Children are kept at safe distance from everyone coming from outside including parents. Even though the outbreak of COVID-19 is becoming more intense, we are continuing our education on various online platforms besides continuing with our dance, songs and soft skill classes. Many people have lost their livelihood during this pandemic and they are unable to sustain for themselves. To support such parents and other people Rainbow Homes teams have provided necessary help in form of ration kits.



# महामारी के दौरान देखभाल ही सबसे बड़ा मंत्र

म झे होम में रहने में बड़ा मजा आता है और महामारी के दौरान भी यहां हमारा पूरा ख्याल रखा गया। हम सभी का कोरोना टेस्ट भी है जिससे हम सभी सुरक्षित महसूस करने लगे। हमें कोविड-19 से बचाव के भी सारी एहतियात व तरीके बताए गए और सारी जरूरी चीजें उपलब्ध कराई गईं जैसे कि दिन में दो बार नींबू पानी, बुखार देखते रहने के लिए थर्मामीटर, ऑक्सीमीटर, मास्क, दस्ताने व सैनेटाइजर आदि। हम शारीरिक दूरी बनाए रखने का ख्याल रखते हैं और हमारे कमरे भी सप्ताह में एक बार सैनेटाइज किए जाते हैं। बच्चों को बाहर से होम में आने वाले सारे लोगों से सुरक्षित दूरी पर रखा जाता है, उनके माता-पिता से भी। कोविड के बढ़ते प्रकोप के बीच भी हमारी पढ़ाई अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर ऑनलाइन चलती रही। साथ ही डांस, संगीत व सॉफ्ट स्किल्स की क्लास भी जारी रखी। सारे बच्चों की इसमें दिलचस्पी है। महामारी के दौरान कई लोगों को आय व रोजगार से वंचित होना पडा। उनमें से कई लोगों के लिए घर चलाना मुश्किल हो रहा था। रेनबो होम की टीम ने ऐसे कई लोगों को राशन आदि उपलब्ध कराके मदद पहुंचाई।

# लॉकडाउन ने कई सबक सिखाए

विड-19 महामारी ने दुनियाभर में जो लॉकडाउन लगाना पड़ा, उसने हमें हमें बता दिया है कि हम अपनी प्रकृति के प्रति प्रदूषण में जो कमी आई, ट्रैफिक कम होने के बाहर निकलने के कारण जो अपराध में कमी आई इलाकों में जिस तरह से स्वच्छंद विचरण करने अपने चारों तरफ किस तरह से दोहन व शोषण हम छोड़ा भी ख्याल रखें तो हमारी दुनिया कितनी रही हैं हमारे स्कूल बंद हो गए और पढाई रुक हमें सीखने में मुश्किलें आनी लगी। दिनचर्या पर गया। बार-बार हाथ धोना, गरम पानी पीना, दिनचर्या का हिस्सा हो गए। हम बगैर इम्तिहान



7th std **Gyan Vigyan Rainbow** Home, Patna

उथल-पुथल मचा दी है लेकिन इसके चलते कई सबक भी अनजाने में सिखा दिए हैं। इसने कितने लापरवाह थे। लॉकडाउन के कारण कारण जो वातावरण शुद्ध हुआ, लोगों के कम और जंगलों से जानवर हमारे आसपास के लगे. उससे हमें यह अहसास हो गया कि हम कर रहे थे और हमें यह इशारा कर दिया कि बेहतर हो सकती है। लेकिन कई चुनौतियां भी गई। हर चीज ऑनलाइन मोड में शिफ्ट हो गई। जबरदस्त असर पडा और बाहर निकलना रुक ऑनलाइन क्ला में हिस्सा लेना हमारी नई दिए ही अगली कक्षा में पहुंच गए।

## Pandemic has taught us many things

OVID-19 pandemic has created a havoc around the world, but it has also given us many lessons because of the unwanted lockdown. It has taught us that how careless we were towards our nature. Less amount of pollution, pure environment because of less traffic, less crime because of less movement of people out of their homes, carefree wildlife around- this all has shown us that how we were exploiting everything around us and how much better

world can be if we take care of all these things. But there have been many huge challenges. Our school were shut down and our studies stopped. Everything was switched to online mode and we had to face difficulty in learning. Daily routine has been changed drastically and outings have been stopped. Frequent hand washing, drinking hot water and attending online classes were added to our new routines. We got promoted to next class without exams.

#### अभिभावकों की बातें

## तसल्ली थी कि बच्चे रेनबो होम में सुरक्षित हैं।

री बच्ची ज्ञान विज्ञान रेनबो होम में रहकर पढाई कर रही है। कोरोना महामारी का प्रकोप जब से बढ़ा, तब से हम लोगों का सारा कामकाज बंद है। हमारे पास कोई कायदे का घर भी नहीं था। स्कूल बंद थे, मुहल्ले की सारी दुकानें बंद थी। मेरे पति साफ-सफाई का काम करते थे। लॉकडाउन में सारा काम छूट गया। काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता। कई बार बिना वजह पुलिस की भी मार खानी पडती। लेकिन इस सारी मुश्किल में रेनबो होम की टीम से काफी मदद मिली। हमें इस बात की तसल्ली थी कि बच्चे रेनबो होम में सुरक्षित हैं। हमें रेनबो होम से काफी राशन भी मिला। उसके बिना हमारी हालत बहुत खराब हो जाती। इसके लिए हम रेनबो टीम के शुऋगुजार हैं।



सोनी खातून, पटना

#### Relieved that kids were safe at Rainbow Home

y kid is at Gyan Vigyan
Rainbow Home. Because of the Covid-19 pandemic, we were left with no work. We didn't have any proper place to live. Schools were closed and all shops in neighborhood were

closed too. My husband had a cleaning work, but that was also gone. We had to face many problems. Many times, police will come and beat us for no reason. Amidst all this, Rainbow Home team helped us a lot. We were also relieved that our kids are safe at Rainbow Home. We also received ration from Home, without it we would not have been able to survive. We are incredibly grateful to Rainbow Home team for that.



SATHI

RAINBOW

**Hyderabad** 

RELIEF THROUGH

SUPPORT

In the crisis caused by the COVID pandemic and resultant lockdown, almost every person was **L** affected. The impact was equally huge in lives of parents of our kids. We received many requests about requirement of ration to survive during lockdown also some need of emotional support to overcome the pandemic stress. ARUN Rainbow home, Lalapet has come forward to distribute ration among all the families of Rainbow Home children. It became possible only through the support received from APPI (Azim Premji Philanthropic Initiatives).

Our teams across the nation are doing their bit and when even during strict lockdown we were distributing ration, then our frontline team of social mobilisers received immense amount of love from parents and their families. Our COVID-19 relief work also included providing cooked food to neighborhood homeless communities as well as distributing old clothes to the temporary shelters. Besides, we also provided many families with second lot of ration as due to long lockdown and complete shutdown of companies and industries, many were still not able to fond any means of livelihood. Thus we made sure that no parents or families of our children have to suffer for food during lockdown. We had regular discussions with children and their families in this regard.

ARUN Rainbow Home, Lalapet, Hyderabad

-विड और उसके चलते को लॉकडाउन का असर हर इंसान पर पड़ा, हमारे होम के बच्चों के परिवारों पर भी। उन्हें राशन की भी जरूरत थी और भावनात्मक सहारे की भी। लालापेट अरुण रेनबो होम की टीम ने बच्चों के परिवारों में राशन बांटने का जिम्मा



उठाया और इसमें हमें अजीम प्रेमजी फिलेंथ्रॉफिक इनिशिएटिव से सहयोग मिला। साथ में हमने आसपड़ोस के इलाके में तैयार खाना और अस्थायी आश्रयगृहों में कपड़े भी बांटे। हमने कोशिश की कि हमारे बच्चों के किसी भी परिवार को मुश्किल का सामना न करना पड़े। इसके लिए हमें बच्चों के परिवारों से खुब प्यार भी मिला।



enuka, Latha's mother works as a maid. During the lockdown, like others she had no source of income or livelihood as people were not even allowing maids due to fear of infection. She is a single mother and stays at Hafeespet, Hyderabad. She had to struggle to find food during the pandemic. She said, "Rainbow Home really helped to feed my family. I was able to sustain for one whole month with sufficient groceries. I don't know, what would I have done without this."



नबो होम में रहने वाली लता की मां रेणुका हफीसपेट में रहती हैं और घरों में काम करती है लेकिन लॉकडाउन के दौरान लोगों ने उन्हें घरों में बुलाना बंद कर दिया। उनके पास आय का कोई जरिया नहीं रहा। ऐसे समय में रेनबो होम की टीम ने राशन से मदद की। राशन से पुरा एक महीने का काम घर में चल गया।

# Huge task to support parents

anga is mother of Chamundi. She lives at Shappor in Hyderabad. She also works as a maid in nearby houses but due to COVID her life become terrible, with no source of income. During her hard times Rainbow Home supported her. She said, "I will never forget the help she received. She felt that it was big responsibility for Rainbow Home to support children as well as their parents. It is a huge task." She was extremely grateful to Rainbow Homes as well as APPI.

🟲 मुंडी की मां गंगा शेप्पोर इलाके में रहती हैं और वह भी आसपास के मुडा का मा गंगा शाप्तार श्राप्त । एक विकास में उनका काम घरों में काम करती हैं। लेकिन महामारी के चक्कर में उनका काम छूट गया। इस मुश्किल घड़ी में रेनबो होम की टीम से उनका साथ दिया। वे कहती हैं कि बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता का भी ख्याल रखना एक बड़ी जिम्मेदारी है जिसे रेनबो होम की टीम ने बखूबी निभाया। हम समय पर मिली इस मदद को कभी नहीं भूल पाएंगे।



சாத்தி

ரெயின்போ

মু জ

రెయిన్బో

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

রেইনবো সাখী

ರೈನ್ಬ್ಯೋ

EN.

**GITB** 

ரெயின்போ

రెయిన్బో

साथी

रनबो

SATHI

RAINBOW

RAINBOW SATHI

சாத்தி

ரெயின்போ

రెయిన్బో

साधी

रेजबो

SATHI

**Hyderabad** 

## I GOT COURAGE **AND HOPE AT** HOME

M. Susheela Intermediate II Year.

Medi Bavi Home, Secunderabad

efore coming to Rainbow Home, I used to sleep on the street. I had to beg and was without any proper clothes. Then, some people from the Home saw us on the street after my parents had died. They brought me to the Home. We were provided care and protection. They gave us courage and hope. If not for this, I wouldn't have been able to go to school. My brothers are also being looked after in Aman Vedika Homes, and they are also studying well.

During recent floods, the street was flooded upto our ankles. We were unable to leave the place. We were frightened and hungry. Then I told my sister about what our Home sisters had instructed us. So, she called them told them of our plight and asked if they can help us. Next morning, sisters came and gave us rice and other things for cooking. Then government help also came. They gave 10,000 Rs of grant to each family. If our Home hadn't come to our help we would definitely have gone back to begging. I shall always feel very grateful to the Home for this. I feel proud of having come this far in my studies.



# होम में उम्मीद व साहस मिला

ने नबो होम आने से पहले मैं फुटपाथ पर सोती थी। मुझे भीख 💙 मांगनी पड़ती थी, पहनने के लिए ढंग के कपड़े तक नहीं थे। जब मेरे माता-पिता की मौत हो गई तो होम से जुड़े कुछ लोगों ने हमें देखा। वे ही हमें होम लेकर आए। हमें यहां देखरेख व सुरक्षा मिली। इससे मुझे हिम्मत व उम्मीद, दोनों मिले। अगर यह नहीं होता तो हम

कभी स्कूल नहीं जा पाते। मेरे भाई भी अमन वेदिका होम में रह रहे हैं और अच्छे से पढाई कर रहे हैं।

हाल में जब बाढ़ आई तो सड़कों पर काफी पनी भर गया था। हम वहां से कहीं जा भी नहीं सकते थे। हम भूखे भी थे और डरे हुए भी थे। तब मुझे याद आया कि होम की सिस्टर्स ने क्या हिदायत दी थी। मैंने अपनी बहन को बताया और उसने तुरंत होम में फोन करके हालत बताई और पूछा कि क्या वे कोई मदद कर सकते हैं। अगली ही सुबह होम से सिस्टर्स आ गई और हमारे लिए खाना बनाने का सामान, चावल वगैरह ले आई। फिर बाद में सरकारी मदद भी आ गई और उन्होंने हर परिवार को दस हजार रुपये की राहत दी। अगर उस समय होम की टीम नहीं आई होती तो हमें फिर से भीख मांगनी पडती।

मैं इसके लिए हमेशा होम की शुऋगुजार रहंगी। मुझे यह सोचकर बड़ा गर्व महसूस होता है कि मैं यहां आकर इतनी पढ़ाई कर पाई।



प्रार्थना

Thank you for this beautiful life as part of creation! WE believe, we wish, to live in friendship and mutual

respect with head held high, in courage and self confidence.

We believe, we wish that all human beings, whether men or women, live in equality, and in happiness, whatever their colour, caste, class, religion, region, language or abilities.

We believe that, we wish to strongly oppose divisive forces and ideologies that spread hatred and divide us and support democratic and non-violent actions for justice, humanity, truth and peace, taking injustice done to others as inflicted on us.

WE believe in, we wish to contribute our mite towards, the building of more humane and free world, in good health and joyful learning and spreading knowledge. God!

We believe in, and wish to join our tiny hands with the multitude of the people in this ages-old divine journey of love.

र्इश्वर अल्लाह

हमारी ये दुआ है कि इस दुनिया में कोई भी बच्चा ना हो जिसे भोजन प्यार सुरक्षा और शिक्षा न मिले और यह भी प्रार्थना हैं कि हम अपने आस पास सबकी जिंदगी में खुशी की रोशनी भर दे।

ಈಶ್ವರ ಅಲ್ಲಾ ಜೀಸಸ್ ನಿಮ್ಮಲ್ಲಿ ನಮ್ಮೆಲ್ಲರ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ ಈ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಮಗು ಆಹಾರ ಪ್ರೀತಿ, ಸುರಕ್ಷತೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣದಿಂದ ವಂಚಿತರಾಗದಿರಲಿ ಇದು ನಮ್ಮ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ ನಮ್ಮ ಹಾಗೂ ನಮ್ಮ ಸುತ್ತಮುತ್ತಲಿನ ಎಲ್ಲರ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಸಂತೋಷ ಹಾಗೂ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ಕರುಣಿಸಿ.











🕒 ರೈನ್ಬ್ಯೋ ಸಾಥಿ 🕒

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिळार्रिंथ रेफ्ले ● पिप्पीर्लंपिंप काम्रेक्री

Newsletter of Rainbow Homes (for private circulation only)



Rainbow Homes Program - ARUN works with Rainbow Homes (for girls) and Sneh Ghar (for boys) to empower children formerly on the streets to reclaim their childhood by providing Comprehensive Care, Food, Shelter, Health and Education.

# Anna Dhara Campaign

The Anna Dhara campaign is an attempt to reach out to supporters like you from the civil society to make a difference in the lives of children living in Rainbow Homes and Sneh Ghars located in 45 Govt & Private Schools in 8 states.

- providing minimum of a day's meal for 100 children
- share life nourishing values with children



#### Bank Details: Bank A/C Name: ASSOCIATION FOR RURAL AND URBAN NEEDY ( ARUN ) BANK : Yes Bank Ltd A/C No: 042494 600000102 Branch : ABIDS, Hyderabad

: YES80000424

#### Rainbow Homes EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

Anuradha Konkepudi, Executive Director Email: reach@rainbowhome.in Rainbow Homes Programe ARUN, 1-1-711/c/1, 1st floor, Opp. vishnu Residency, Gandhinagar, Hyderabad - 80 Office No: 040-65144656



